प्रेम वाहिनी

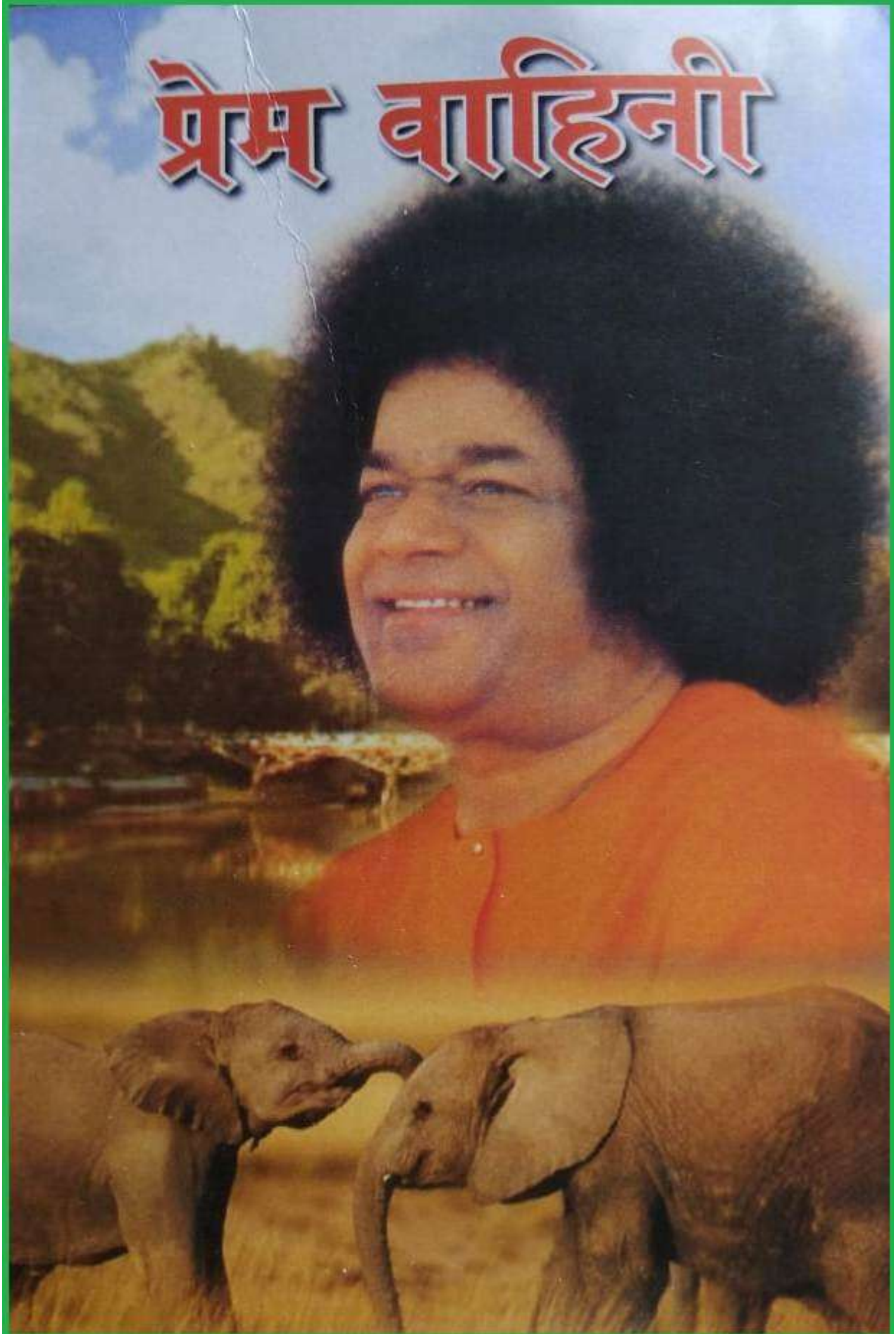

७

सद्गुण ही ज्ञान है

ज्ञान का अर्थ जानकारी होता है, परन्तु यह कोरी बौद्धिक क्रिया मात्र नहीं है। "खाने" का अर्थ भोज्य पदार्थ को जिह्वा पर रखना मात्र नहीं होता है। 'खाना' क्रिया तभी सार्थक होती है जब कि भोजन को चबाकर, निगल कर, पचाकर आत्मसात् करके रक्तप्रणाली में पहुंचा दिया जावे और तत्पश्चात् माँसपेशी, अस्थि, शक्ति और पराक्रम भी प्राप्त होवे। इसी प्रकार ज्ञान से भी जीवन के क्षण व्याप्त और अनुप्राणित होने चाहियें। इसकी अभिव्यक्ति सभी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के द्वारा होने वाली सभी क्रियाओं में होनी चाहिये। मानव को इस उच्चस्थिति तक पहुंचना है। विद्वता का भण्डार भर लेना ही ज्ञान नहीं होता है। केवल सद्गुण ही ज्ञान होता है।

व्यक्ति सेवा कर सके, इसके लिये कुछ सीमित मात्रा में, भोग भी भोगा जाता है। ऐसा भोग तो यज्ञ का ही एक अंश होता है। इस शरीर रूपी यन्त्र को संचालित करने के लिये 'अन्न' का ईंधन उपयोग किया जाता है। अन्न स्वयं अपने में यज्ञ नहीं होता है, परन्तु उसे साधन बनाकर यज्ञ को संभव बनाया जा सकता है। इसलिये भोजन करने की लोभवृत्ति को चरितार्थ करना या उदर पोषण बताकर खिल्ली नहीं उड़ाई जा सकती।

पूजा का अर्थ पुष्प चयन करना और उसे मूर्ति के ऊपर रख देना मात्र नहीं होता है वह माली भी जो पुष्पों को उगाने के लिए पौधों की सेवा करता है जिससे वे पुष्प उत्पन्न होते हैं, भगवान का पुजारी है। शरीर को उपयुक्त भोजन देने से ही तो यह समक्ष और सक्रिय होता है। बलिदान का साधन भी यज्ञ ही होता है।

भगवान् की पूजा के लिये सृष्टि का उपयोग, समाज में न्याय और शक्ति की स्थापना करना, शारीरिक कार्यों का नियमन और सामंजस्य, इन तीनों के निमित्त किया सभी कर्म बलिदान के अन्तर्गत आता है। प्रथम को यज्ञ, द्वितीय को दान और तीसरे को तप कहते हैं। सभी मानवीय कृत्य इन्हीं तीन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किये जाने चाहिये।